‘आधे-अधूरे’ नाटक की संवेदना एवं शिल्प

डॉ. गरिमा तिवारी
(सहायक प्राध्यापक)
हिंदी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी - ८४५४०१, बिहार
E-mail: garimatiwari@mgcub.ac.in

HIND4007: हिंदी नाटक एवं रंगमंच

विषय-सूची

- मोहन राकेश का सामान्य परिचय
- 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना
  - मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं का चित्रण
  - पारिवारिक विघटन का चित्रण
  - स्त्री-पुरुष सम्बन्ध का चित्रण
  - नारी की त्रासदी का चित्रण
- 'आधे-अधूरे' नाटक का शिल्प पक्ष
- निष्कर्ष

मोहन राकेश का सामान्य परिचय

- मोहन राकेश (०८ जनवरी १९२५ – ०३ दिसम्बर १९७२) आधुनिक युग के एक महत्वपूर्ण नाटककार थे। इनका पूरा नाम मदन मोहन गुगलानी था।

- इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध, डायरी, यात्रावृतांत, जीवनी आदि साहित्य की लगभग सभी विधाओं को अपनी लेखनी से समृद्ध किया।

- मोहन राकेश का साहित्यिक योगदान निम्नलिखित है –

  कहानी : नन्ही, इन्सान के खंडहर, नये बादल, जानवर और जानवर,एक और ज़िन्दगी, फौलाद का आकाश, आज के साये, मिले-जुले चेहरे, बारिश, क्वाटर

  उपन्यास : अँधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल, अन्तराल

  निबन्ध : परिवेश, बकलम खुद, रंगमंच और शब्द, साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि, कुछ और अस्वीकार, हाशिए पर, आईने के सामने

  नाटक : आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे, पैर तले की जमीन

  यात्रावृतांत : आखिरी चट्टान, पतझड़ का रंगमंच, ऊँची झील

  रिपोर्ताज : सतयुग के लोग

- मोहन राकेश एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न रचनाकार थे और उनका साहित्य सृजन हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

‘आधे-अधूरे’ नाटक की संवेदना

- ‘आधे-अधूरे’ नाटक की रचना मोहन राकेश ने सन १९६९ में की। इस नाटक की संवेदना निम्नलिखित बिंदुओं में अंतर्निहित है -

i. मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं का चित्रण
ii. पारिवारिक विघटन का चित्रण
iii. स्त्री-पुरुष सम्बन्ध का चित्रण
iv. नारी की त्रासदी का चित्रण

मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं का चित्रण

- 'आधे-अधूरे' नाटक के माध्यम से मोहन राकेश ने महानगरों में रहने वाले मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों एवं विडम्बनाओं का चित्रण किया है।
- आर्थिक स्थिति मध्यवर्गीय जीवन की विडंबना का मुख्य कारण है।
- मध्यवर्ग न तो उच्च वर्ग की भांति सुख-सुविधा संपन्न जीवन जी पाता है और न ही निम्न वर्ग में सम्मिलित हो पाता है। फलतः वह आजीवन संघर्ष करता है।
- मध्यवर्गीय पात्रों के आत्मकेंद्रित चरित्र का उदघाटन भी किया गया है।

- मध्यवर्गीय असंतोष एवं उनकी आगे बढ़ने की भावना का भी चित्रण किया गया है।

- मोहन राकेश ने इस नाटक में मध्यवर्ग के दिखावेपन की प्रवृत्ति का व्यंग्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है।

- भूमंडलीकरण के इस दौर में मध्यवर्गीय परिवार के टूटते-बिखरते रिश्ते, उनका अधूरापन, कुंठा, घुटन इत्यादि को मोहन राकेश ने सावित्री और महेंद्र नाथ के परिवार के माध्यम से सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया है।

पारिवारिक विघटन का चित्रण

- आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण और नगरीकरण ने न केवल सामाजिक व्यवस्था के परंपरागत स्वरुप में परिवर्तन किया है अपितु पारिवारिक जीवन में भी क्रांतिकारी बदलाव उपस्थित किया है।

- पारिवारिक मूल्यों और रिश्तों में तेजी से गिरावट आयी है। अर्थतंत्र इतना प्रभावी हो गया है कि पति-पत्नी के संबंधों की मधुरता ही नदारद हो गयी है।

- मोहन राकेश के इस सर्वाधिक चर्चित नाटक में आधुनिकता की इस आंधी में दरकते मानवीय संबंधों, घुटन, निराशा से जूझते हुए चरित्रों का आधा-अधूरा व्यक्तित्व तथा उनका अस्तित्व अत्यंत ही प्रभावी एवं सजीव रूप में चित्रित हुआ है।

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध का चित्रण

- वैश्वीकरण के इस दौर में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध किस हद तक प्रभावित हुए हैं इसकी झलक हमें इस नाटक के दो प्रमुख पात्रों सावित्री और महेन्द्रनाथ के दांपत्य जीवन में देखने को मिलती है।

- आर्थिक कारणों से, सामाजिक पारिवारिक व्यवस्था के आधारस्तंभ कहे जाने वाले स्त्री और पुरुष एक दूसरे के सहयोगी न होकर एक-दूसरे के विरोधी प्रतीत होते हैं।

- अतः इससे स्पष्ट है कि 'आधे-अधूरे' नाटक आधुनिक स्त्री और पुरुष के आपसी लगाव व तनाव का प्रामाणिक एवं जीवंत दस्तावेज है।

नारी की त्रासदी का चित्रण

- 'आधे-अधूरे' नाटक में स्त्री जीवन की त्रासदी का प्रभावी चित्रण हुआ है।

- आधुनिकता के इस दौर में स्त्री भी अपनी अलग पहचान बनाने के लिए प्रयासरत है। अनेकानेक अवरोधों, विसंगतियों को पार कर वह परिवार की जिम्मेदारिओं का वहन करती है फिर भी उसके इस प्रयास की सराहना नहीं होती। उसे स्वार्थी और आत्मकेंद्रित करार दिया जाता है। इस नाटक की केन्द्रीय स्त्री पात्र सावित्री का त्रासदीपूर्ण जीवन इस बात का साक्षी है।

- 'आधे-अधूरे' नाटक की प्रत्येक स्त्री पात्र चाहे वह सावित्री हो या किन्नी और बिन्नी हों, विसंगतिपूर्ण जीवन जीने के लिए अभिशप्त हैं। उनमें से कोई भी अपने जीवन से खुश नहीं है, संतुष्ट नहीं है। उन्हें अपना जीवन अपनी शर्तों पर जीने का अधिकार नहीं है।

- अतः यह नाटक स्त्री जीवन की त्रासदी का आख्यान है।

'आधे-अधूरे' नाटक का शिल्प पक्ष

- मोहन राकेश का यह यथार्थवादी नाटक अपने भाषायी प्रयोग की दृष्टि से आधुनिक युग की सर्वाधिक सफल नाट्य रचना मानी जाती है।
- इस नाटक की भाषा अत्यंत सरल, सहज, बोधगम्य एवं आम बोलचाल की भाषा है।
- मोहन राकेश ने इस नाटक में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। जिसमें प्रवाहमयता, ध्वन्यात्मकता एवं व्यंग्यात्मकता का पुट भी विद्यमान है।
- यत्र तत्र अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

- आधुनिकता बोध का यथार्थ एवं जीवंत चित्रण के कारण इस नाटक की शैली यथार्थवादी है।

- 'आधे-अधूरे' नाटक की भाषा के सम्बन्ध में महेश आनंद ने लिखा है कि "इस नाटक की भाषा अपने से पूर्ववर्ती हिंदी नाटकों से एकदम अलग, आडम्बरहीन, बोलचाल की भाषा है।"

- प्रतीकों एवं बिम्बों का भी सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है।

- अतः अपने शिल्पगत वैशिष्ट्य के कारण भी यह नाटक महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

- मोहन राकेश एक ऐसे नाटककार हैं जिन्होंने जीवन के यथार्थ को अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।
- 'आधे-अधूरे' नाटक उसी प्रयास की एक सार्थक कड़ी है।
- महानगरों में रहने वाले, आर्थिक अभाव झेलने वाले मध्यवर्गीय परिवार के जीवन की त्रासदी का यह नाटक सजीव चित्रण है।
- अतः इससे स्पष्ट है कि यह नाटक संवेदना और शिल्प दोनों धरातलों पर आधुनिक हिंदी नाट्य साहित्य की एक सफल रचना है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. 'आधे-अधूरे' – मोहन राकेश

2. मोहन राकेश : रंग-शिल्प और प्रदर्शन – डॉ. जयदेव तनेजा, राधाकृष्ण प्रकाशन, तीसरा संस्करण (२०१८)

3. बीसवीं शताब्दी का हिंदी नाटक और रंगमंच – गिरीश रस्तोगी, भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण (२०१८)

4. हिंदी नाटक उद्भव और विकास – डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल प्रकाशन, संस्करण (२००८)

धन्यवाद